विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग अष्टम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता: १२

/११/२०२० (एन.सी.ई.आर.टी.)

पाठ: द्वादश: पाठनाम आदर्श मित्रता

पाठ्यांश:

एकदा स्वपत्न्यु: हठेन सुदामा द्वारिकां प्रति गमनाय तत्पर: अभवत् । स: स्वपत्नीं किञ्चिद् उपहारं दातुमकथयत् ।सा पार्श्ववर्तिन: विप्रस्य गृहात् स्वल्पान् तण्डुलान आनीय स्वपतये अयच्छत्।

जीर्णवस्त्रेषु एव सुदामा श्रीकृष्णस्य समीपम् अगच्छत् ।स्वमित्रस्य दुर्दशां दृष्ट्वा श्रीकृष्णस्य नेत्राभ्याम् अश्रूणि अपतन् ।तत:स्नानं भोजनं च कृत्वा तौ वार्ताम् अकुरुताम् ।श्रीकृष्ण: तदा तमपृच्छत् –

शब्दार्था:

हठेन – जिद करने पर , तत्पर: - तैयार , विप्रस्य – ब्राह्मण के ,

दातुमकथयत् – देने के लिए कहा , पार्श्ववर्तिन:- पड़ोसी के ,

स्वपतये -अपने पति को , जीर्णवस्त्रेषु – फटे कपड़ों में,

अश्रूणि – आंसु , अपतन – गिरने लगे , तमपृच्छत् -उसे पूछा

अर्थ

एकबार अपनी पत्नी के जिद करने पर सुदामा द्वारिका की ओर जाने के लिए तैयार हुआ । उन्होंने अपनी पत्नी को कुछ उपहार देने के लिए कहा। उसने पड़ोसी ब्राह्मण के घर से थोड़ा चावल लाकर अपने पति को दिया ।

फटे कपड़ों में ही सुदामा श्रीकृष्ण के समीप गया। अपने मित्र

दुर्दशा को देखकर श्रीकृष्ण के आंखों से आंसू बहने लगे।और तब स्नान भोजन कर वेदोनों बातचीत करने लगे ।श्रीकृष्ण ने तब पूछा –